पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-३४ सोमवार, १३ अप्रैल २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

दक्षिण के अभिनेता साबित होते हैं अच्छे नेता

अभिनेता राजनेता तो बन जाते हैं लेकिन राजनीति में सक्रिय भागीदारी की कमी उनकी काबिलियत पर सवाल खड़े करती है। हिंदी फिल्मों के अभिनेताओं की तूती आम जनता के बीच जमकर बोलती है लेकिन राजनीति की रपटीली राहों में वे खो जाते है। अभी तक मुट्ठी भर अभिनेता ही ऐसे हुए है जिन्हें केंद्रीय कैबिनेट में शामिल होने का मौका मिला है। वहीं, दक्षिणी भाषाओं की फिल्मों के अभिनेताओं की लोकप्रियता और कामकाज का आलम यह है कि उन्होंने मुख्यमंत्री जैसे पद पर पहुंचने के साथ-साथ वर्षों तक जनता के दिलों पर भी शासन भी किया है।हिंदी फिल्मों के अभिनेताओं के विपरीत दक्षिण भारत की फिल्मों के अभिनेताओं ने फिल्मों के साथ-साथ देश की राजनीति के इतिहास में जमकर अपना जलवा बिखेरा है। उनमें कई को अपने-अपने राज्य की सत्ता भी हासिल हुई है। एमजी. रामचंद्रन ऐसे पहले अभिनेता रहे जिन्हें पहली बार किसी राज्य में मुख्यमंत्री की कुर्सी मिली। वह 50 का दशक था। जयललिता का फिल्मी पर्दे से हटकर राजनीति में उदय हुआ और वे भी तमिलनाडु की मुख्यमंत्री हैं। यही इतिहास करूणानिधि का है।

जूतम-पैजार

✍ उत्तम झंवर

विरोध दर्ज करने के साथ पब्लिसिटी पाने के एक नए तरीके के रूप में जूता टेकनीक इन दिनों बहुत ही फेमस है। बुश पर उछले जूते से शुरू हुई ये दास्तां पी.चिदम्बरम के बाद अब नवीन जिंदल तक पहुंच चुकी है। बुश पर फेंके गए जूते के बाद जूतों के स्मारक बनने लगे और उक्त पत्रकार को कड़ी सजाएं मिलने के साथ उसका नाम भी चर्चा में आ गया। पश्चिम की संस्कृति को हाथों-हाथ एडॉप्ट करने वाले हम हिंदुस्तानियों ने समय गंवाए बिना चिदम्बरम पर इसका प्रयोग कर दिया। सिक्ख दंगों में टाइटलर को क्लीन चिट मिली और भुगतान चिदम्बरम ने किया। यह हौसला भी एक पत्रकार ने ही दिखाया था। एक हफ्ता भी पूरा नहीं हुआ कि कांग्रेसियों की बैठक में प्रत्याशी नवीन जिंदल पर पूर्व प्रिंसिपल ने जूता फेंक दिया। इसका कारण उनके बेटे को डाटा एंट्री विभाग से निकाल देना बताया। चुनावी सरगर्मियों के बीच सीधी जूतमपैजार भले ही नागरिकों को सही प्रत्याशी चुनने में मदद न कर रही हो लेकिन पार्टियां जरूर इससे खुश हैं। इस वक्त नेता-अभिनेता सभी वोटों की जोड़-तोड़ के साथ अपनी भलाई में उलझे हैं। संजय नही तो मान्यता, सलमान नहीं तो कैटरीना... लोगों को लुभाने के लिए रूपहले पर्दे के सितारे भी जमीन से जुड़ने का प्रयास करते नजर आ रहे हैं। आड़वाणी के सामने मल्लिका साराभाई की उपस्थिति जहां लोगों के लिए आश्चर्य का विषय बन गई है वहीं मनमोहन कहते हैं वे आडवाणी को प्रधानमंत्री जितना दर्जा ही नहीं देते। ऐसे में उन्होंने यह बात तो बिलकुल साफ कर दी कि उनसे मुकाबले में आडवाणी कहीं नहीं खड़े हैं।

वहीं महाराष्ट्र की ४८ में से कम से कम १० लोकसभा सीटों के चुनाव परिणाम प्रभावित होने की पूरी संभावना है। शिवसेना और मनसे जैसी पार्टियों से तो उत्तर भारतीय वोटर दूरी बनाए हुए हैं। परन्तु उलझन यहां भी कम नही है कि ये नहीं तो क्या कांग्रेस, राकांपा, भाजपा या सपा कौन उनका है। वोटर्स का रूझान तो यही बता रहा है कि उत्तर भारतीय पूरी मुंबई में एक-सा फैसला नहीं करेंगे। वे अलग-अलग सीटों पर अलग-अलग पार्टियों और उम्मीदवारों के पक्ष में सामने आएगें। यहां भी ज्यादा झुकाव कांग्रेस-एनसीपी सपा और भाजपा की तरफ ही है। बहरहाल सियासी जोड़-तोड़ और गठबंधन कर लेने की कवायदे जोर-शोर से जारी हैं। कांग्रेस कुछ सहारे लेकर ही अपना परचम लहरा सकेंगी।

इस दौरान दो बड़ी साहित्यिक क्षतियां हुई हैं। भारतीय साहित्य जगत के चर्चित हस्ताक्षर साहित्यकार विष्णु प्रभाकर और शब्दों के साथ काठ के गणपति बनाने में महारथ रखने वाले देवास के कवि नईम नहीं रहे। पिट्स परिवार इन्हें विनम्र श्रृद्धांजलि देता है।

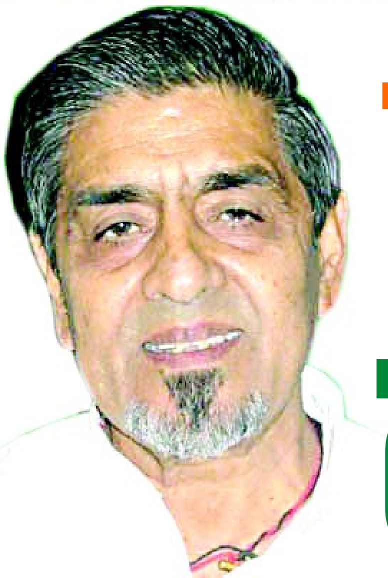

पहले दौर में ही कांग्रेस फेल

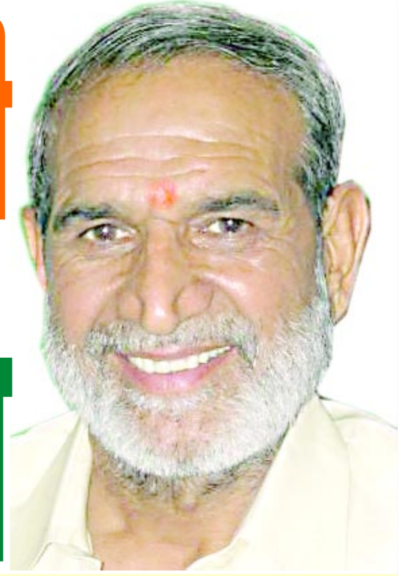

पार्टी को भुगतना पड़ा रणनीतिकारों की विफलता का खामियाजा

नई दिल्ली । चुनाव में 'स्पिन डॉक्टर्स' बड़े-बड़े नेताओं का भविष्य बनाते हैं. पर कांग्रेस ने जिन 'मैनेजरों' को उम्मीदवारों के हक में माहौल बनाने की जिम्मेदारी सौंपी थी, उनकी विफलता का खामियाजा पार्टी को भुगतना पड़ा. चुनाव से ऐन पहले सिख विरोधी दंगों में जगदीश टाइटलर को क्लीन चिट कांग्रेस पर भारी पड़ी. लोकसभा चुनाव की तमाम रणनीति और किसी भी राजनीतिक स्थिति से निपटने के लिये बनाये गये 'वार रूम' के मैनेजर चुनाव के पहले दौर में ही फेल हो गए.

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए सिख विरोधी दंगों के बाद जगदीश टाइटलर जब-जब चुनाव लड़े हैं, यह मुद्दा उठा है। पर इस बार सीबीआई की क्लीन चिट ने आग में घी का काम किया। सवाल यह उठता है कि क्या कांग्रेस को टाइमिंग का अंदाजा नहीं था। क्या पार्टी के 'मैनेजरों' को इसके नुकसान का अंदेशा नहीं था। सीबीआई के क्लीन चिट दिए जाने का वक्त पार्टी रणनीतिकारों की काबलियत पर सवाल खड़ा करता है।

पार्टी के 'मैनेजर' सफाई दे रहे हैं कि सीबीआई स्वतंत्र संस्था है और सरकार उसके काम में कोई हस्तक्षेप नहीं करती। सीबीआई ने अपनी रिपोर्ट बंद लिफाफे में अदालत को दी थी। पर कुछ खबरों के आधार पर पार्टी ने जगदीश टाइटलर को क्लीन चिट दिए जाने का स्वागत किया। कांग्रेस के 'मैनेजर' ने वक्त की नजाकत को समझते हुए क्लीन चिट मामले को तूल न दिया होता, तो स्थिति यहां तक नहीं पहुंचती। पंजाब प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता के मुताबिक, अकाली दल के पास चुनाव में कोई मुद्दा नहीं था। पर टाइटलर को क्लीन चिट के रूप में उन्हें ऐसा मुद्दा मिल गया जिस पर वह धार्मिक भावनाओं को भड़का सकते थे। वह मानते हैं कि यह हमारे चुनावी रणनीतिकारों की विफलता है। वह हालात को नहीं संभाल पाए।

यहां भी भारत १५० वर्ष पीछे

पन्ने इतिहास के...

रजत खंडेलवाल

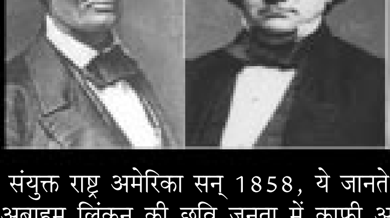

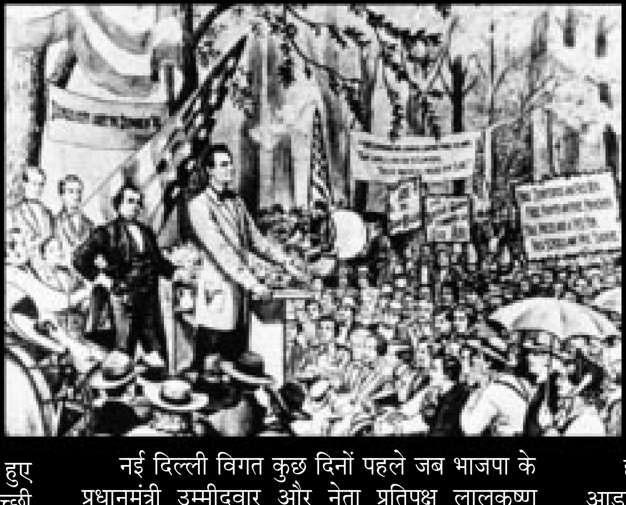

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका सन् 1858, ये जानते हुए के अब्राहम लिंकन की छवि जनता में काफी अच्छी थी और वे एक जनप्रिय नेता थे, फिर भी उन्होंने सन् 1858 के चुनावों के दौरान अपने प्रतिद्वंद्वी स्टीफन डगलस के साथ एक नहीं- दो नहीं बल्कि 9 बार आमने सामने विभिन्न सामूहिक जन मंचों पर होने वाली बहस में हिस्सा लिया और उसके बाद चुनाव जीतकर राष्ट्रपति बने.

नई दिल्ली विगत कुछ दिनों पहले जब भाजपा के प्रधानमंत्री उम्मीदवार और नेता प्रतिपक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को आमने-सामने बहस के लिये आमंत्रित किया तो मनमोहन सिंह ने यह कहकर टाल दिया कि अमेरिका में राष्ट्रपति पद्धती का शासन लागू होता है और भारत में प्रधानमंत्री पद्धती का, पर वे ये कैसे भूल गये के मूल तत्व शासन पद्धती नहीं लोकतंत्र है.

हालांकि मनमोहनसिंह का यह भी कहना है कि वे आडवाणी को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार की मान्यता नहीं देना चाहते पर ये निर्णय जनता ले तो अधिक उचित होगा और जहां तक आमने-सामने बहस का चलन है न सिर्फ अमेरिका बल्कि यूरोप के भी कई देशों में इसका चलन है, तो भारत के नेता भला इससे क्यों कतराते हैं और वे भी मनमोहनसिंह जैसे ज्ञानवान और अनुभवी नेता.